Ayushman Digital Mission: Challenges Are Not Few	
Date	Publication
11.11.2021	Rajasthan Patrika

नीति नवाचार : हैकर्स स्वास्थ्य डेटा चुराने और इसे व्यावसायिक रूप से बेचने की कोशिश कर सकते हैं

आयुष्मान डिजिटल मिशन, चुनौतियां भी कम नहीं

मोनिका चौधरी
एसोसिएट प्रोफेसर, आइआइएचएमआर यूनिवर्सिटी
@patrika.com

स्वास्थ्य अभिलेखों के प्रमाणीकरण और क्रॉस चेकिंग पर ध्यान देना आवश्यक है

डी.के.मंगल
एडवाइजर, एसडी गुप्ता स्कूल ऑफ पब्लिक हेल्थ
@patrika.com

पिछले दिनों आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन की घोषणा की गई थी। डिजिटल मिशन की प्रमुख विशेषता देश के प्रत्येक नागरिक के लिए एक अद्वितीय हेल्थ आइडी तैयार करना है, जो एक हेल्थ अकाउंट के रूप में काम करेगी। इसमें निजी स्वास्थ्य जानकारी को एक एप की मदद से सहेजा और पुनर्प्राप्त किया जा सकेगा। इसके कई लाभ बताए जा रहे हैं, लेकिन इसके क्रियान्वयन में कई चुनौतियां भी हैं। अस्पतालों को तकनीकी संसाधन उपलब्ध कराने होंगे और अस्पताल कर्मचारियों को प्रशिक्षित करना होगा। प्रौद्योगिकी की कमी से निपटना होगा। साथ ही काम करने के तरीकों में बदलाव लाना होगा। चिकित्सा प्रदाता की मानसिकता, नुस्खे व रोगी के स्वास्थ्य रेकॉर्ड पर विस्तृत जानकारी प्रदान करने की अनिच्छा इस मिशन की सफलता में प्रमुख बाधा होगी। अस्पतालों, विशेष रूप से सार्वजनिक क्षेत्र के अस्पतालों के काम में क्रांतिकारी बदलाव की आवश्यकता होगी। सभी हितधारकों द्वारा प्रौद्योगिकी को अपनाना मिशन के लिए एक प्रमुख चुनौती है। मिशन की सफलता के लिए रोगियों, स्वास्थ्य पेशेवरों और प्रदाताओं की डिजिटल साक्षरता आवश्यक होगी और सामुदायिक स्तर पर कई प्रशिक्षण कार्यक्रम शामिल करने होंगे।

कोविड-19 महामारी के दौरान देश में शिक्षा में एक डिजिटल खाई देखी गई। अगर डिजिटाइजेशन को समझदारी से प्रबंधित नहीं किया गया, तो स्वास्थ्य सेवा में भी इसी तरह की डिजिटल खाई उभरने की आशंका है। जिनके पास प्रौद्योगिकी तक पहुंच है और वे डिजिटल रूप से साक्षर हैं, उनकी सेवाओं तक बेहतर पहुंच होगी। उनका अपने डेटा पर भी बेहतर नियंत्रण होगा। स्वास्थ्य और शिक्षा सतत विकास के दो सबसे महत्त्वपूर्ण स्तंभ हैं। सरकार को स्वास्थ्य सेवाओं से संबंधित डिजिटल खाई के चौड़ा होने की आशंका को खत्म करने के लिए निरंतर और विशेष प्रयास करने होंगे। सेवाओं तक पहुंच, प्रभावकारिता, दक्षता और प्रभावशीलता में आसानी का लाभ सभी तक पहुंचना चाहिए। डिजिटल स्वास्थ्य मिशन में यही वादा किया गया है। डिजिटल खाई को पाटने के लिए सरकार को समर्पित वित्तीय संसाधन आवंटित करने होंगे। राजनीतिक संस्थाओं में मजबूत इच्छाशक्ति की आवश्यकता होगी।

गोपनीयता, सुरक्षा और स्वास्थ्य डेटा के दुरुपयोग के बारे में भी विशेषज्ञ चिंता जताते रहे हैं। प्रत्येक व्यक्ति को अपने डेटा की गोपनीयता का स्वाभाविक अधिकार है। कार्ड पर संग्रहीत स्वास्थ्य डेटा डॉक्टर, फार्मासिस्ट, डायग्नोस्टिक लैब और अस्पताल के पास जाएगा। रोगी के रेकॉर्ड की गोपनीयता और कई चैनलों के बीच प्रवाहित होने वाले डेटा की सुरक्षा सुनिश्चित की जानी चाहिए। मजबूत फायरवॉल और डेटा सुरक्षा प्रोटोकॉल विकसित करने होंगे। देश में बैंकिंग सेक्टर में साइबर क्राइम बढ़ रहे हैं। हैकर्स स्वास्थ्य डेटा तक पहुंच बनाने, इसे चुराने और पैसे के लिए इसे व्यावसायिक रूप से बेचने की कोशिश करेंगे। बड़े पैमाने पर स्वास्थ्य डेटा तक आसान पहुंच से कई अनैतिक कृत्य हो सकते हैं। सख्त साइबर कानून लागू करने होंगे। अनुसंधान या व्यापार में डेटा के दुरुपयोग की संभावना भी रहेगी। सख्त मानदंड और प्रोटोकॉल विकसित करने होंगे।

एक अन्य समस्या डेटा की गलत रेकॉर्डिंग या भंडारण की है। यदि रेकॉर्डिंग त्रुटियां या डेटाबेस त्रुटियां हैं, तो यह सिस्टम बाधाओं या स्वास्थ्य खतरों को जन्म देगा। विभिन्न स्तरों पर स्वास्थ्य अभिलेखों का प्रमाणीकरण, क्रॉसचेकिंग और डेटा का प्रमाणीकरण करना होगा। एक छोटी सी चूक से पूरा सिस्टम चरमरा सकता है।